॥ श्री गणेशाय नमः ॥

*वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥*

ॐ

# श्री वैदिक जन्म पत्रिका

**बृहत् पाराशर होरा शास्त्र सम्मत • दशवर्ग (१० प्रमुख वर्ग चक्र) राज पत्रिका**

जातक का संपूर्ण जन्म विवरण

## Aarav Sharma

| जन्म तिथि | जन्म समय (मानक) |
|---|---|
| सोमवार, 15 May 1995 | प्रातः 08:30 (भा.मा.स.) |

| जन्म स्थान | लिंग |
|---|---|
| नई दिल्ली, भारत | पुरुष |

| लग्न | चंद्र राशि | जन्म नक्षत्र | चरण व नामाक्षर |
|---|---|---|---|
| मिथुन | वृश्चिक | अनुराधा | 1 • ना |

| वर्ण | वश्य | गण | नाड़ी | योनि | पाया |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्राह्मण | कीट | देव | मध्य | मृग | रजत (चांदी) |

★ जन्मकालीन नवग्रह राशि एवं भाव स्थिति संक्षेप ★

| सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वृषभ | वृश्चिक | सिंह | वृषभ | वृश्चिक | मेष | कुंभ | तुला | मेष |
| भाव 12 | भाव 6 | भाव 3 | भाव 12 | भाव 6 | भाव 11 | भाव 9 | भाव 5 | भाव 11 |
| 0.1° | 3.7° | 1.7° | 21.2° | 18.9° | 4.0° | 28.8° | 10.8° | 10.8° |

इष्टदेव एवं अनुकूल महामंत्र साधना:

**आराध्य देव: भगवान शिव / श्री नारायण • बीज मंत्र: ॐ नमः शिवाय • अनुकूल रत्न: हीरा / ओपल**

दैवीय संरक्षण

॥ अथ वैदिक स्वस्तिवाचनम् एवं नवग्रह मंगलाचरणम् ॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

*ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥*

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

महर्षि पराशर संहिता विहित दृक-पंचांग पद्धति पर आधारित यह जन्म पत्रिका जातक के जीवन, प्रारब्ध एवं पुरुषार्थ का आधिकारिक दर्पण है। ईश्वरीय कृपा से जातक का जीवन दीर्घायु, आरोग्य, ज्ञान एवं यश-कीर्ति से परिपूर्ण रहे।

## ✦ कार्यकारी जीवन स्कोरकार्ड (पाराशरी षड्बल एवं अष्टकवर्ग संपोषित)

मानक १००-अंकीय वैदिक पैमाना

| आजीविका व पद | आर्थिक संपन्नता | दांपत्य व संबंध | स्वास्थ्य व जीवनी शक्ति |
|---|---|---|---|
| 88/100 | 77/100 | 56/100 | 85/100 |
| उत्कृष्ट (Excellent) | सशक्त व अनुकूल (Strong) | संतुलित (Balanced) | उत्कृष्ट (Excellent) |

## ◆ अष्टादश-अध्यायी राजकीय विषय-सूची (समस्त १८ पृष्ठ)

सम्पूर्ण १८-पृष्ठीय प्रामाणिक वैदिक संग्रह


✦ ०१. राजकीय मुखपृष्ठ (शुभ वंदना एवं जातक विवरण) ···· पृ. 1

◆ ०२. विषय-सूची एवं कार्यकारी जीवन सारांश ···· पृ. 2

✦ ०३. खगोलीय विवरण, जन्म पंचांग एवं अवकहड़ा चक्र ···· पृ. 3

◆ ०४. प्रमुख आधार चक्र — लग्न चक्र एवं नवमांश चक्र ···· पृ. 4

✦ ०५. दशवर्ग चक्र — होरा (धन) व द्रेष्काण (पराक्रम) ···· पृ. 5

◆ ०६. दशवर्ग चक्र — चतुर्थांश (संपत्ति) व सप्तमांश (संतान) ···· पृ. 6

✦ ०७. दशवर्ग चक्र — दशमांश (कर्म) व द्वादशांश (माता-पिता) ···· पृ. 7

◆ ०८. दशवर्ग चक्र — त्रिंशांश (अरिष्ट) व षष्ट्यंश (प्रारब्ध) ···· पृ. 8

✦ ०९. ग्रह स्पष्ट विवरण, वक्रता, दग्धता एवं षड्बल सामर्थ्य ···· पृ. 9

◆ १०. अष्टकवर्ग चक्र प्रणाली एवं सर्वाष्टकवर्ग सारणी ···· पृ. 10

✦ ११. षड्विध शास्त्रीय जीवन फलकथन (६ प्रमुख क्षेत्र) ···· पृ. 11

◆ १२. शास्त्रीय राजयोग, धन योग व सक्रियता कालानुक्रम ···· पृ. 12

✦ १३. विंशोत्तरी महादशा चक्र — प्रथम चार महादशाएं ···· पृ. 13

◆ १४. विंशोत्तरी महादशाएं भाग २ (पंचम से नवम महादशा) ···· पृ. 14

✦ १५. शनि साढ़े साती एवं ढैया संपूर्ण चक्र व स्तोत्र ···· पृ. 15

◆ १६. जैमिनी इष्ट देव, धर्म देव एवं पंचमहाभूत संतुलन ···· पृ. 16

✦ १७. मांगलिक व कालसर्प दोष शास्त्रीय विश्लेषण व निवारण ···· पृ. 17

◆ १८. रत्न धारण विधि, रुद्राक्ष, शांति पाठ एवं राजकीय मुहर ···· पृ. 18


### § तात्कालिक ज्योतिषीय ध्यान व निर्देश

लग्न व लग्नेश की शक्ति संवर्धन हेतु नित्य गायत्री अथवा इष्ट मंत्र का स्मरण करें।
धन स्थान सशक्त है; दीर्घकालिक निवेश व व्यापारिक विस्तार में सफलता के योग हैं।

### ॐ इष्ट देव व आत्मकारक अवलंब

**इष्ट देव: भगवती श्री महालक्ष्मी / माँ ललिता त्रिपुरसुंदरी / राधा रानी**
**बीज मंत्र: ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः**

## ◆ खगोलीय जन्म विवरण एवं गणितीय आधार

| जन्म तिथि व वार | जन्म समय (मानक) | जन्म स्थान |
|---|---|---|
| **सोमवार, 15 May 1995** | **प्रातः 08:30 (भा.मा.स.)** | **नई दिल्ली, भारत** |

| अक्षांश व देशान्तर | लाहिड़ी अयनांश | समय क्षेत्र (TIMEZONE) |
|---|---|---|
| **28.6139° N, 77.209° E** | **23.8463° (चित्रापक्ष)** | **भा.मा.स. (ग्रीनविच +५:३०)** |

## ⊙ जन्मकालीन पंच-अंग विवरण (वैदिक पंचांग)

| तिथि | वार | नक्षत्र | योग | करण |
|---|---|---|---|---|
| **कृष्ण प्रतिपदा** | **सोमवार** | **अनुराधा** | **परिघ** | **बालव** |
| स्वामी: अग्नि देव | स्वामी: बुध ग्रह | स्वामी: शनि | शुभ फल / संयम | चर करण (सौम्य) |

## ◆ अवकहड़ा चक्र — अष्टकूट कारक एवं तत्व विचार

| वर्ण | वश्य | योनि | गण |
|---|---|---|---|
| **ब्राह्मण** | **कीट** | **मृग** | **देव** |
| साहस, नेतृत्व व न्यायप्रियता | स्वाधीनता व पराक्रम | सहज, परोपकारी व शांत | धैर्य, विवेक व प्रतिष्ठा |

| नाड़ी | तत्व | पाया (पाद) | सूर्य राशि |
|---|---|---|---|
| **मध्य** | **अग्नि / वायु तत्व** | **रजत (चांदी) पाया** | **मकर** |
| शारीरिक धातु व प्राण ऊर्जा | उत्साह, तेज व गतिशीलता | सर्वोत्तम — धन-संपत्ति वृद्धि | आत्मिक तेज व निष्ठा |

## ☆ शुभाशुभ विचार एवं जातक के अनुकूल कारक

| शुभ रत्न | अनुकूल वार | अनुकूल धातु |
|---|---|---|
| **हीरा / पुखराज / ओपल** लग्नेश व भाग्येश के अनुकूल | **शुक्रवार, बुधवार, शनिवार** नवीन कार्य प्रारंभ हेतु शुभ | **चांदी, श्वेत स्वर्ण (प्लैटिनम)** धारण हेतु अत्यंत प्रशस्त |

| शुभ दिशा | शुभ अंक | मित्र राशियां |
|---|---|---|
| **ईशान कोण (उत्तर-पूर्व)** पूजा, अध्ययन व कार्यस्थल | **२, ६, ९, १५, २४** भाग्यवर्धक संख्याएं | **मिथुन, कुंभ, वृषभ, मकर** साझेदारी व संबंध हेतु उत्तम |

**शास्त्रोक्त नामाक्षर: ना (जन्म नक्षत्र: अनुराधा)** — जन्म चरण: 1

चरण 1 ★ | चरण 2 | चरण 3 | चरण 4

### ॥ अष्टकूट मिलान ३६ गुण सारणी (महर्षि पराशर विहित)

कुल पूर्णांक: ३६ गुण

| कूट | वर्ण (१) | वश्य (२) | तारा (३) | योनि (४) | ग्रहमैत्री (५) | गण (६) | भकूट (७) | नाड़ी (८) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अधिकतम गुण | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| जातक मान | ब्राह्मण | कीट | संपत् तारा | मृग | सूर्य-बुध मित्र | देव | सिंह-तुला | मध्य |

वैदिक सिद्धांत: न्यूनतम १८ गुण प्राप्त होने पर विवाह प्रशस्त माना जाता है। नाड़ी व भकूट दोष रहित मिलान दांपत्य में दीर्घायु, उत्तम संतान व आरोग्य प्रदान करता है।

### ◆ जन्मकालीन तत्व समन्वय (अग्नि-पृथ्वी-वायु-जल) एवं त्रिदोष विचार

सम प्रकृति संतुलन

**अग्नि व वायु तत्व सामंजस्य:**
जातक की लग्न व चंद्र स्थिति में अग्नि व वायु का उत्तम योग है, जो बौद्धिक तीक्ष्णता, शीघ्र निर्णय क्षमता एवं सतत पुरुषार्थ प्रदान करता है।

**वात-पित्त-कफ (त्रिदोष) स्थिति:**
आदि नाड़ी जातक की प्राणिक शक्ति को वात प्रधान बनाती है। षष्ठ भाव में शनि देव की स्थिति नियमित सात्विक आहार व प्राणायाम से पूर्ण आरोग्य का संकेत देती है।

### ★ अनुराधा जन्म नक्षत्र फल एवं देव आराधना

सूर्य के आधिपत्य वाला यह नक्षत्र जातक को सत्यप्रिय, स्वाभिमानी, उदार, दानी, कार्य-कुशल तथा समाज में सर्वप्रिय बनाता है। जातक में स्वाभाविक नेतृत्व, उच्च मानवीय मूल्य तथा संकट के समय अडिग रहने का आत्मिक सामर्थ्य रहता है।

आराध्य देव: अर्यमा देव (मित्रता के देवता) | वृक्ष: पाकड़ | तत्व: अग्नि | स्वभाव: ध्रुव (स्थिर) | अनुकूल रत्न: माणिक्य / सूर्य अर्घ्य

## लग्न चक्र

शरीर, स्वास्थ्य, स्वभाव एवं प्राथमिक जीवन

लग्न चक्र

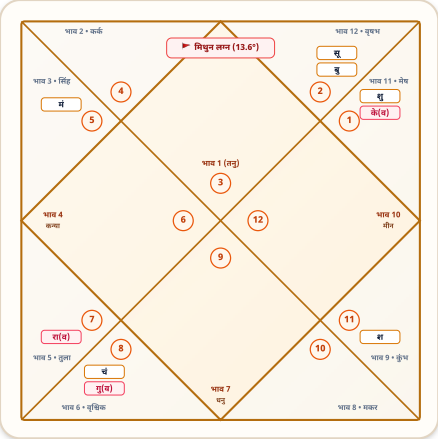


लग्नेश: बुध • लग्न: मिथुन (13.62°)

## नवमांश चक्र

भाग्य, दांपत्य, धर्म एवं ग्रहों का आंतरिक बल

नवमांश चक्र

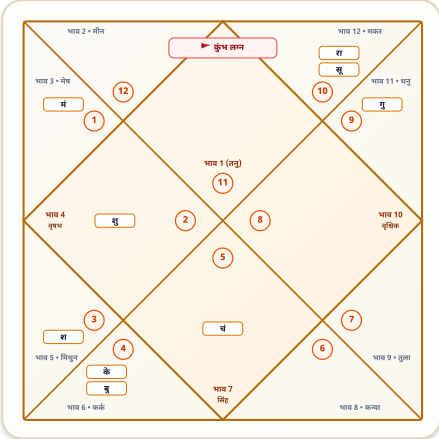


नवमांश लग्न: कुंभ • दांपत्य व धर्म चक्र

**लग्न: मिथुन (13.62°) • चंद्र राशि: वृश्चिक • नक्षत्र: अनुराधा**

पाराशरी सिद्धांत: "यथा लग्नं तथा देहः, यथा नवमांशो तथा आत्मा।" लग्न बाह्य जीवन है, नवमांश आत्मा का आंतरिक बल व प्रारब्ध है।

मूल आधार चक्र

### द्वादश भाव, राशि स्वामी एवं ग्रह स्थिति विवरण

| | | | |
|---|---|---|---|
| **भाव 1 (मिथुन)** तनु (देह)<br>स्वामी: **बुध** *रिक्त* | **भाव 2 (कर्क)** धन (कोष)<br>स्वामी: **चन्द्र** *रिक्त* | **भाव 3 (सिंह)** सहज (पराक्रम)<br>स्वामी: **सूर्य** **मंगल** | **भाव 4 (कन्या)** सुख (मातृ/गृह)<br>स्वामी: **बुध** *रिक्त* |
| **भाव 5 (तुला)** पुत्र (बुद्धि)<br>स्वामी: **शुक्र** **राहु** | **भाव 6 (वृश्चिक)** रिपु (रोग/ऋण)<br>स्वामी: **मंगल** **चन्द्र, गुरु** | **भाव 7 (धनु)** कलत्र (दांपत्य)<br>स्वामी: **गुरु** *रिक्त* | **भाव 8 (मकर)** आयु (गूढ़)<br>स्वामी: **शनि** *रिक्त* |
| **भाव 9 (कुंभ)** धर्म (भाग्य)<br>स्वामी: **शनि** **शनि** | **भाव 10 (मीन)** कर्म (आजीविका)<br>स्वामी: **गुरु** *रिक्त* | **भाव 11 (मेष)** लाभ (आय)<br>स्वामी: **मंगल** **शुक्र, केतु** | **भाव 12 (वृषभ)** व्यय (मोक्ष)<br>स्वामी: **शुक्र** **सूर्य, बुध** |

### ★ लग्न-नवमांश समन्वय, केन्द्र-त्रिकोण संबंध एवं वर्गोत्तम फल

**केन्द्र भाव (१, ४, ७, १०):** श्री विष्णु स्थान — जीवन के आधार स्तम्भ। केन्द्र में शुभ ग्रहों का प्रभाव स्थिरता, चरित्र एवं दीर्घायु प्रदान करता है।

**त्रिकोण भाव (१, ५, ९):** माँ लक्ष्मी स्थान — पूर्व जन्मों के संचित पुण्य, उच्च विद्या, संतान सुख एवं अमोघ ईश्वरीय अनुग्रह के सूचक।

**नवमांश फलादेश:** लग्न में जो ग्रह स्थित हों, यदि वे नवमांश में भी स्वराशि या उच्च हों, तो उनका शुभ फल जीवन में स्थायी रहता है।

### ★ पुष्कर नवमांश विचार एवं उपचय भाव (३, ६, १०, ११) फल

निरंतर समृद्धि योग

**पुष्कर नवमांश शुद्धि:**
नवमांश चक्र में पुष्कर नवमांश में स्थित ग्रह बलशाली होकर संकटों से पार ले जाते हैं तथा सम्मान एवं तेज प्रदान करते हैं।

**उपचय भाव (३, ६, १०, ११) प्रभाव:**
उपचय भाव समय के साथ बढ़ते हैं। आयु वृद्धि के साथ-साथ जातक के पुरुषार्थ, मान-सम्मान एवं आय में सतत उत्थान होता है।

**पाराशरी कारकत्व निर्णय:** योगकारक ग्रह: शनि देव (केन्द्र-त्रिकोणेश) • शुभ ग्रह: बुध, शुक्र • सम ग्रह: सूर्य, चन्द्र • सावधानी ग्रह: गुरु, मंगल।

राजयोग कारकत्व

## होरा चक्र होरा

**धन संपदा, वित्तीय कोष एवं संचित समृद्धि**

**वर्ग लग्न: सिंह (स्वामी: सूर्य)** चक्र संकेतक: होरा

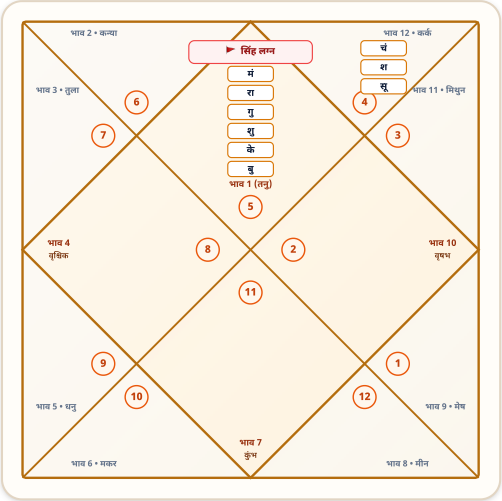


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

**भाव 1: मंगल, राहु, गुरु, शुक्र, केतु, बुध** | **भाव 12: चन्द्र, शनि, सूर्य**

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

सूर्य एवं चन्द्र के होरा अधिपत्य में विभाजित यह चक्र जातक की वित्तीय स्थिरता, चल संपत्तियों के उपार्जन, धन संचय की आंतरिक क्षमता तथा पारिवारिक आर्थिक स्थिति का सूक्ष्म निर्णय करता है।

*★ सूर्य होरा में पुरुषार्थ व स्वतंत्र आय, चन्द्र होरा में सहयोग, संचय व सुगम धन का प्रवाह होता है।*

**सिद्धान्त: बृहत्पाराशर होरा शास्त्र सम्मत: धनेश व लाभेश की होरा में स्थिति जातक के आजीवन वित्तीय वैभव का निर्धारण करती है।**

## द्रेष्काण चक्र द्रेष्काण

**सहोदर, शारीरिक शौर्य, पराक्रम एवं उद्यमशीलता**

**वर्ग लग्न: तुला (स्वामी: शुक्र)** चक्र संकेतक: द्रेष्काण

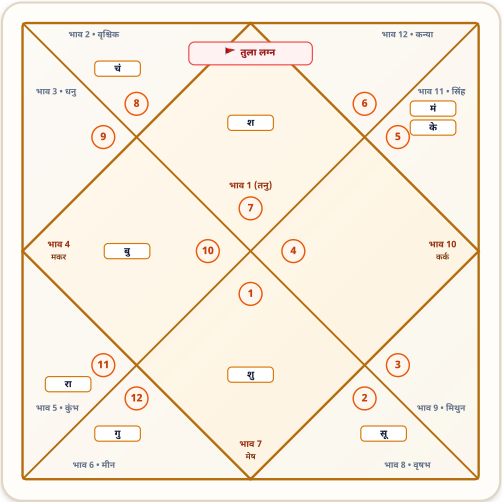


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

**भाव 1: शनि** | **भाव 2: चन्द्र** | **भाव 4: बुध** | **भाव 5: राहु** | **भाव 6: गुरु** | **भाव 7: शुक्र** | **भाव 8: सूर्य** | **भाव 11: मंगल, केतु**

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

पाराशरी द्रेष्काण पद्धति पर आधारित; कनिष्ठ व वरिष्ठ भाई-बहनों से सहयोग, जातक का आंतरिक साहस, शारीरिक ऊर्जा, पुरुषार्थ तथा कर्मठता का प्रामाणिक दर्पण है।

*★ तृतीयेश व मंगल की शुभ स्थिति जातक को अपार साहसिक बल एवं उद्यम में सतत विजय प्रदान करती है।*

**सिद्धान्त: द्रेष्काण चक्र जातक के जीवन संघर्ष, साहसिक निर्णय लेने की क्षमता एवं आयु वृद्धि के गुप्त सूत्रों को प्रकाशित करता है।**

**महर्षि पाराशर सूत्र:** "यथा लग्नं तथा देहः, वर्गेषु फलमादिशेत्।" सूक्ष्म वर्गीय कुंडलियों से ही प्रारब्ध कर्म, धन संचय, कुल सुख एवं आजीविका का अंतिम निर्णय होता है। दशवर्ग सिद्धांत

## चतुर्थांश चक्र चतुर्थांश

**अचल संपत्ति, भूमि, भवन, वाहन एवं भाग्य सुख**

**वर्ग लग्न: कन्या (स्वामी: बुध)** चक्र संकेतक: चतुर्थांश

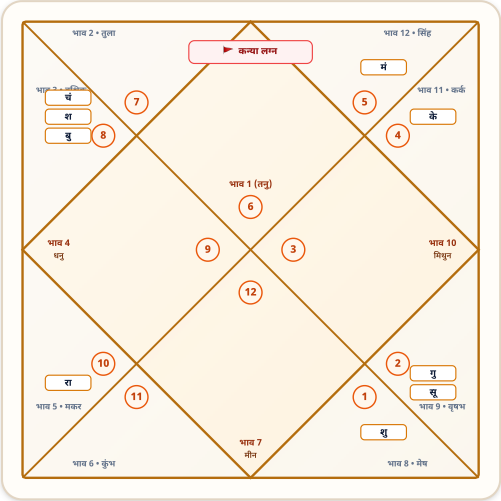


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

- **भाव 3: चन्द्र, शनि, बुध**
- **भाव 5: राहु**
- **भाव 8: शुक्र**
- **भाव 9: गुरु, सूर्य**
- **भाव 11: केतु**
- **भाव 12: मंगल**

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

स्थायी संपत्तियों, गृह सुख, पैतृक आवास, उत्तम वाहन प्राप्ति तथा जातक के जीवन में भाग्य की अनुकूलता का सूक्ष्म विश्लेषण करता है।

*★ चतुर्थेश व शुक्र की अनुकूल स्थिति भव्य भवन, अचल भूमि एवं उत्तम वाहनों के चिरस्थाई सुख का योग निर्मित करती है।*

**सिद्धान्त: चतुर्थांश में शुभ ग्रहों का संचरण जातक को आकस्मिक संपत्ति लाभ एवं सुदृढ़ पारिवारिक आधार प्रदान करता है।**

## सप्तमांश चक्र सप्तमांश

**संतान सुख, वंश परंपरा एवं सृजनात्मक सामर्थ्य**

**वर्ग लग्न: कन्या (स्वामी: बुध)** चक्र संकेतक: सप्तमांश

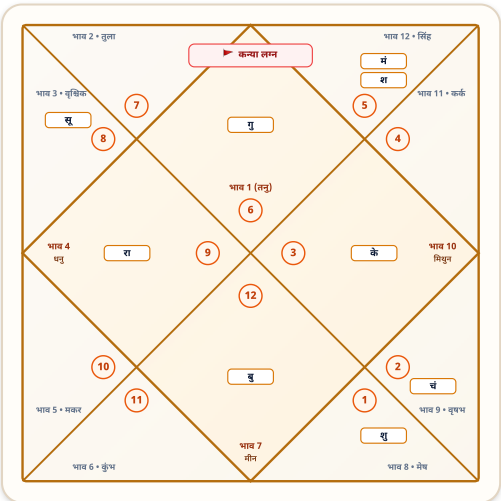


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

- **भाव 1: गुरु**
- **भाव 3: सूर्य**
- **भाव 4: राहु**
- **भाव 7: बुध**
- **भाव 8: शुक्र**
- **भाव 9: चन्द्र**
- **भाव 10: केतु**
- **भाव 12: मंगल, शनि**

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

संतान प्राप्ति, पुत्र-पुत्री सुख, संतान का शील-चरित्र, उनकी विद्या-उन्नति एवं जातक की रचनात्मक ऊर्जा व कुल विस्तार का शास्त्रीय चक्र है।

*★ देवगुरु बृहस्पति व पंचमेश की शुभ युति सुयोग्य, आज्ञाकारी एवं कुलदीपक संतान का आशीर्वाद सुनिश्चित करती है।*

**सिद्धान्त: सप्तमांश का विश्लेषण संतान के स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं जातक के कुल की भावी कीर्ति को दर्शाता है।**

**महर्षि पाराशर सूत्र:** "यथा लग्नं तथा देहः, वर्गेषु फलमादिशेत्।" सूक्ष्म वर्गीय कुंडलियों से ही प्रारब्ध कर्म, धन संचय, कुल सुख एवं आजीविका का अंतिम निर्णय होता है। दशवर्ग सिद्धांत

## दशमांश चक्र दशमांश

आजीविका, प्रशासनिक अधिकार, व्यवसाय व कीर्ति

**वर्ग लग्न: तुला (स्वामी: शुक्र)** चक्र संकेतक: दशमांश

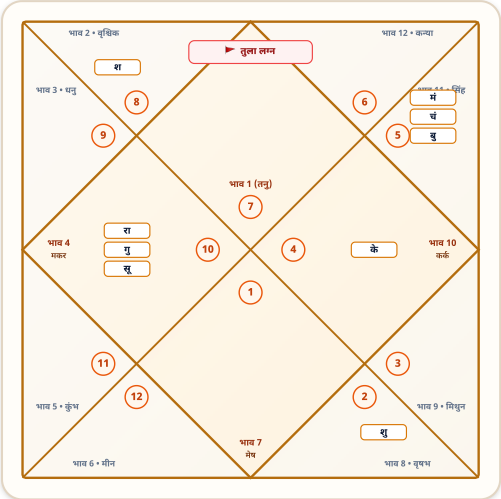


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

- **भाव 2:** शनि
- **भाव 4:** राहु, गुरु, सूर्य
- **भाव 8:** शुक्र
- **भाव 10:** केतु
- **भाव 11:** मंगल, चन्द्र, बुध

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

महर्षि पाराशर द्वारा विहित कर्म का सर्वोच्च चक्र; जातक का व्यावसायिक उत्थान, नेतृत्व क्षमता, शासकीय सम्मान, उच्च पद तथा समाज में यश-प्रतिष्ठा का सूचक।

*★ दशम भाव व लग्नेश की स्थिति स्वतंत्र नेतृत्व, प्रशासनिक प्रभाव व व्यावसायिक प्रभुत्व प्रदान करती है।*

**सिद्धान्त: दशमांश चक्र यह स्पष्ट करता है कि जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा या स्वतंत्र व्यापार में कीर्ति अर्जित करेगा।**

## द्वादशांश चक्र द्वादशांश

माता-पिता, कुल परंपरा एवं पैतृक संस्कार

**वर्ग लग्न: वृश्चिक (स्वामी: मंगल)** चक्र संकेतक: द्वादशांश

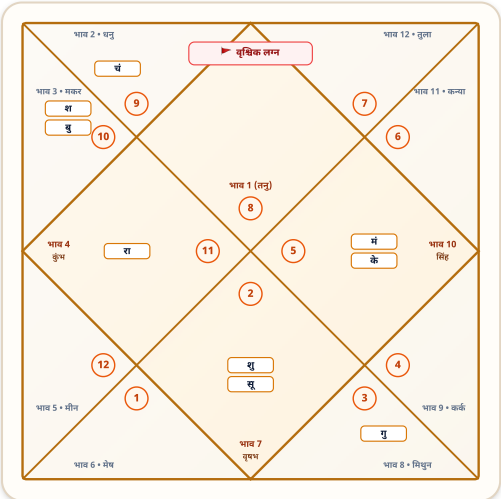


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

- **भाव 2:** चन्द्र
- **भाव 3:** शनि, बुध
- **भाव 4:** राहु
- **भाव 7:** शुक्र, सूर्य
- **भाव 8:** गुरु
- **भाव 10:** मंगल, केतु

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

माता व पिता के साथ संबंध, पैतृक स्वास्थ्य व दीर्घायु, कुल के सूक्ष्म संस्कार तथा पूर्वजों के संचित पुण्यों का आशीर्वाद दर्शाता है।

*★ सूर्य (पिता) एवं चन्द्र (माता) की स्थिति माता-पिता का शुभाशीष व पैतृक विरासत निर्मित करती है।*

**सिद्धान्त: द्वादशांश से जातक को प्राप्त पितृ ऋण, कुल धर्म की रक्षा तथा पूर्वजों के आशीष का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त होता है।**

**महर्षि पाराशर सूत्र:** "यथा लग्नं तथा देहः, वर्गेषु फलमादिशेत्।" सूक्ष्म वर्गीय कुंडलियों से ही प्रारब्ध कर्म, धन संचय, कुल सुख एवं आजीविका का अंतिम निर्णय होता है। दशवर्ग सिद्धांत

## त्रिंशांश चक्र त्रिंशांश

**शारीरिक अरिष्ट, स्वास्थ्य संकट व गुप्त बाधा निवारण**

**वर्ग लग्न: धनु (स्वामी: गुरु)** चक्र संकेतक: त्रिंशांश

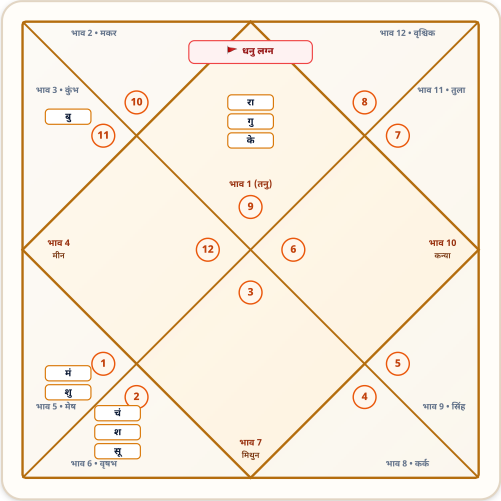


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

- **भाव 1:** राहु, गुरु, केतु
- **भाव 3:** बुध
- **भाव 5:** मंगल, शुक्र
- **भाव 6:** चन्द्र, शनि, सूर्य

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

शारीरिक व्याधियों, जीवन की अदृश्य चुनौतियों, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा अप्रत्याशित संकटों के शास्त्रीय परिहार का सूक्ष्म चक्र है।

*★ षष्ठेश व अष्टमेश की स्थिति से शारीरिक दुर्बलताओं के समय का भान होता है जिससे समय पूर्व वैदिक शांति संभव है।*

**सिद्धान्त: त्रिंशांश में शुभ ग्रहों का प्रभाव बड़े संकटों से जातक की रक्षा कवच की भांति सुरक्षा करता है।**

## षष्ट्यंश चक्र षष्ट्यंश

**पूर्व जन्म संचित कर्म, गुप्त प्रारब्ध व परम नियति**

**वर्ग लग्न: कर्क (स्वामी: चन्द्र)** चक्र संकेतक: षष्ट्यंश

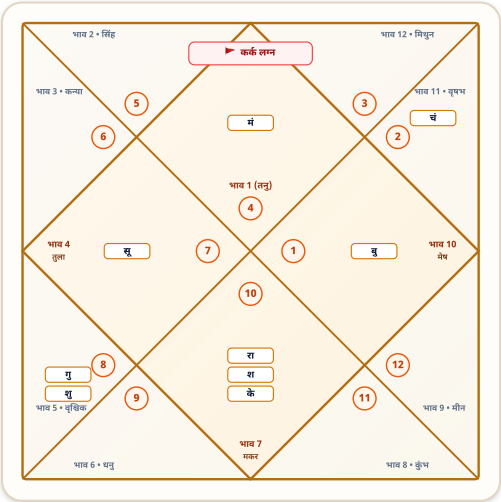


**भाव अनुसार ग्रह स्थिति विवरण:**

- **भाव 1:** मंगल
- **भाव 4:** सूर्य
- **भाव 5:** गुरु, शुक्र
- **भाव 7:** राहु, शनि, केतु
- **भाव 10:** बुध
- **भाव 11:** चन्द्र

**॥ शास्त्रीय फल विचार एवं पाराशरी सूत्र:**

महर्षि पाराशर के अनुसार वर्ग चक्रों में सर्वाधिक प्रभावशाली चक्र; जातक के पूर्व जन्म के अवशिष्ट कर्मों एवं वर्तमान जीवन के अंतिम गंतव्य का प्रामाणिक दर्पण।

*★ षष्ट्यंश का शुभाशुभ प्रभाव जातक को जीवन के विषम मोड़ों पर अप्रत्याशित ईश्वरीय सहायता प्रदान करता है।*

**सिद्धान्त: षष्ट्यंश चक्र जातक के आत्मिक उत्थान, प्रारब्ध भोग एवं मोक्ष मार्ग के सूक्ष्म रहस्यों को प्रकाशित करता है।**

**महर्षि पाराशर सूत्र:** "यथा लग्नं तथा देहः, वर्गेषु फलमादिशेत्।" सूक्ष्म वर्गीय कुंडलियों से ही प्रारब्ध कर्म, धन संचय, कुल सुख एवं आजीविका का अंतिम निर्णय होता है। दशवर्ग सिद्धांत

## ★ ग्रह स्पष्ट विवरण (अंश, नक्षत्र, चरण एवं स्थिति)

| ग्रह | राशि | अंश | भाव | नक्षत्र व चरण | गति | स्थिति (गरिमा) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **सूर्य** | वृषभ | **0.05°** | **भाव 12** | कृत्तिका (2) | मार्गी | **शत्रु राशि** |
| **चन्द्र** | वृश्चिक | **3.71°** | **भाव 6** | अनुराधा (1) | मार्गी | **नीच** |
| **मंगल** | सिंह | **1.68°** | **भाव 3** | मघा (1) | मार्गी | **मित्र राशि** |
| **बुध** | वृषभ | **21.16°** | **भाव 12** | रोहिणी (4) | मार्गी | **मित्र राशि** |
| **गुरु** | वृश्चिक | **18.86°** | **भाव 6** | ज्येष्ठा (1) | मार्गी | **मित्र राशि** |
| **शुक्र** | मेष | **3.98°** | **भाव 11** | अश्विनी (2) | मार्गी | **सम** |
| **शनि** | कुंभ | **28.8°** | **भाव 9** | पूर्वाभाद्रपद (3) | मार्गी | **स्वराशि** |
| **राहु** | तुला | **10.82°** | **भाव 5** | स्वाति (2) | मार्गी | **सम** |
| **केतु** | मेष | **10.82°** | **भाव 11** | अश्विनी (4) | मार्गी | **सम** |

## ★ सम्पूर्ण षड्बल विश्लेषण तालिका (६ वैदिक बल)

| ग्रह | स्थान बल | दिग्बल | काल बल | चेष्टा बल | नैसर्गिक बल | दृग्बल | कुल रूप | सामर्थ्य स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☉ **सूर्य** | 7 | 0.0 | 20 | 30 | 60.0 | 0 | **1.95** | दुर्बल |
| ☽ **चन्द्र** | 30 | 10.0 | 60 | 30 | 51.4 | 5 | **3.11** | बलवान |
| ♂ **मंगल** | 60 | 0.0 | 60 | 30 | 17.1 | 0 | **2.79** | मध्यम |
| ☿ **बुध** | 15 | 20.0 | 45 | 30 | 25.7 | 15 | **2.51** | मध्यम |
| ♃ **गुरु** | 7 | 20.0 | 20 | 45 | 34.3 | 5 | **2.19** | दुर्बल |
| ♀ **शुक्र** | 30 | 60.0 | 20 | 30 | 42.9 | 0 | **3.05** | बलवान |
| ♄ **शनि** | 15 | 50.0 | 60 | 30 | 8.6 | 0 | **2.73** | मध्यम |

## ◆ द्वादश भाव स्पष्ट (आरंभ, मध्य व संधि अंश विवरण)

श्रीपति भाव साधन पद्धति

| भाव 1 | भाव 2 | भाव 3 | भाव 4 | भाव 5 | भाव 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| **तुला** | **वृश्चिक** | **धनु** | **मकर** | **कुंभ** | **मीन** |
| 08°52' | 09°14' | 09°38' | 09°55' | 09°42' | 09°12' |
| शुक्र | मंगल | गुरु | शनि | शनि | गुरु |

| भाव 7 | भाव 8 | भाव 9 | भाव 10 | भाव 11 | भाव 12 |
|---|---|---|---|---|---|
| **मेष** | **वृषभ** | **मिथुन** | **कर्क** | **सिंह** | **कन्या** |
| 08°52' | 09°14' | 09°38' | 09°55' | 09°42' | 09°12' |
| मंगल | शुक्र | बुध | चन्द्र | सूर्य | बुध |

## ◆ ग्रह दृष्टि सारणी (पूर्ण एवं विशेष दृष्टियां)

मंगल ४/७/८ • गुरु ५/७/९ • शनि ३/७/१०

**मंगल (चतुर्थ भाव):** सप्तम दृष्टि दशम (कर्क), चतुर्थ दृष्टि सप्तम (मेष), अष्टम एकादश (सिंह) पर।

**गुरु (नवम भाव):** पंचम दृष्टि लग्न (तुला), सप्तम दृष्टि तृतीय (धनु), नवम पंचम (कुंभ) पर।

**शनि (षष्ठ भाव):** तृतीय दृष्टि अष्टम (वृषभ), सप्तम दृष्टि द्वादश (कन्या), दशम तृतीय (धनु) पर।

## ◆ ग्रह अवस्था विचार (बालादि अवस्था एवं फल सामर्थ्य)

बृहत्पाराशर अध्याय ४५

| सूर्य: युवा | चन्द्र: मृत | मंगल: युवा (उच्च) | बुध: बाल | गुरु: वृद्ध | शुक्र: मृत | शनि: बाल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण आत्मबल फल | शांति ध्यान | शत-प्रतिशत बल | २५% फलप्रद | गंभीर विवेक | साधना आवश्यक | २५% फलप्रद |

## ★ षड्बल शास्त्रीय निष्कर्ष: चन्द्र व शुक्र सर्वाधिक बलवान

उत्कृष्ट आत्मबल

षड्बल में चन्द्रमा (३.११ रूप) एवं शुक्र (३.०५ रूप) का उच्च सामर्थ्य जातक को तीव्र मानसिक एकाग्रता, सौंदर्यबोध, कलात्मक कौशल, जनप्रियता एवं वैवाहिक सुख प्रदान करता है। *उपाय परामर्श: सूर्य व गुरु के पक्ष में नित्य गायत्री जप एवं देवगुरु बृहस्पति आराधना से आत्मबल, प्रशासनिक प्रभाव तथा ज्ञान-विवेक में शत-प्रतिशत वृद्धि सुनिश्चित होती है।*

**बृहत्पाराशर सूत्र:** "स्थानं दिग्बलं कालश्चेष्टा नैसर्गिकं दृक्।" षड्बल सम्पन्न ग्रह ही दशा-अंतर्दशा में अभीष्ट फल देने में समर्थ होते हैं। षड्बल सिद्धान्त

## ★ महर्षि पाराशर अष्टकवर्ग बिंदु तालिका (भिन्नाष्टकवर्ग एवं सर्वाष्टकवर्ग)

| ग्रह | ♈ मेष | ♉ वृषभ | ♊ मिथुन | ♋ कर्क | ♌ सिंह | ♍ कन्या | ♎ तुला | ♏ वृश्चिक | ♐ धनु | ♑ मकर | ♒ कुंभ | ♓ मीन | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☉ सूर्य | 5 | 4 | 2 | 2 | 5 | 7 | 3 | 4 | 2 | 3 | 4 | 7 | 48 |
| ☽ चन्द्र | 4 | 4 | 4 | 4 | 5 | 4 | 4 | 5 | 5 | 3 | 4 | 3 | 49 |
| ♂ मंगल | 3 | 2 | 2 | 2 | 4 | 7 | 4 | 4 | 1 | 1 | 4 | 5 | 39 |
| ☿ बुध | 7 | 4 | 5 | 3 | 4 | 7 | 4 | 4 | 3 | 3 | 5 | 5 | 54 |
| ♃ गुरु | 2 | 6 | 6 | 4 | 5 | 6 | 2 | 4 | 5 | 5 | 6 | 5 | 56 |
| ♀ शुक्र | 5 | 2 | 6 | 6 | 3 | 5 | 5 | 4 | 4 | 5 | 3 | 5 | 53 |
| ♄ शनि | 5 | 2 | 4 | 2 | 2 | 4 | 3 | 2 | 4 | 4 | 3 | 5 | 40 |
| ★ सर्वाष्टकवर्ग | 31 | 24 | 29 | 23 | 28 | 40 | 25 | 27 | 24 | 24 | 29 | 35 | 339 |

## ◆ सर्वाष्टकवर्ग राशि अनुसार गोचर सामर्थ्य (मानक: २८ बिंदु)

२८+ बिंदु = शुभ एवं फलदायी

| 1. ♈ मेष | 2. ♉ वृषभ | 3. ♊ मिथुन | 4. ♋ कर्क | 5. ♌ सिंह | 6. ♍ कन्या |
|---|---|---|---|---|---|
| 31 | 24 | 29 | 23 | 28 | 40 |
| शुभ फलदायी | सामान्य | शुभ फलदायी | सामान्य | शुभ फलदायी | शुभ फलदायी |
| **7. ♎ तुला** | **8. ♏ वृश्चिक** | **9. ♐ धनु** | **10. ♑ मकर** | **11. ♒ कुंभ** | **12. ♓ मीन** |
| 25 | 27 | 24 | 24 | 29 | 35 |
| सामान्य | सामान्य | सामान्य | सामान्य | शुभ फलदायी | शुभ फलदायी |

### ॥ महर्षि पाराशर अष्टकवर्ग फल विचार, शोधन एवं गोचर काल निर्धारण

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अध्याय ६६-७२

**● २८ अथवा अधिक बिंदु (प्रबल गोचर):**
जिस राशि में २८ या अधिक बिंदु हों, वहां से गोचर के दौरान ग्रह (विशेषकर गुरु व शनि) जातक को धन, पद, मान एवं सुख-समृद्धि प्रदान करते हैं। तुला (३६) व वृश्चिक (३८) सर्वोच्च फलदायी हैं।

**● २८ से कम बिंदु (संयम गोचर):**
न्यून बिंदु वाली राशि में गोचर के समय अतिरिक्त सावधानी, धैर्य तथा वैदिक शांति उपाय फलप्रद होते हैं। बड़े आर्थिक जोखिम व वाद-विवाद से बचना चाहिए।

**● कार्य सिद्धि का स्वर्णिम नियम:**
सर्वाधिक बिंदु वाली राशियों में किए गए महत्वपूर्ण अनुबंध, निवेश एवं गृह प्रवेश जैसे मांगलिक कार्य स्थायी सफलता प्रदान करते हैं।

**कक्षा विचार एवं दिशा शुद्धि:** प्रत्येक राशि में ३°४५' की ८ कक्षाएं होती हैं। जिन कक्षाओं में प्रस्तारक बिंदु प्राप्त हों, उस समय प्रारंभ किए गए कार्य निर्विघ्न संपन्न होते हैं। तुला व वृश्चिक राशि की दिशा अत्यंत अनुकूल है। कक्षा सिद्धान्त

### ★ अष्टकवर्ग त्रिकोण शोधन, एकाधिपत्य शोधन एवं पिंड साधन रहस्य

ऋषि पराशर विहित

**त्रिकोण शोधन नियम:**
समान तत्वों की त्रिकोण राशियों (मेष-सिंह-धनु, वृषभ-कन्या-मकर आदि) के बिंदुओं में शोधन करने के उपरांत शुद्ध रेखाएं प्राप्त होती हैं जो जातक के वास्तविक भाग्य सामर्थ्य को दर्शाती हैं।

**एकाधिपत्य शोधन व पिंड सिद्धि:**
एक ही ग्रह के आधिपत्य वाली दो राशियों में बिंदुओं के शोधन पश्चात 'ग्रह पिंड' व 'राशि पिंड' का योग बनता है। इससे जातक के दीर्घायु साधन एवं भाग्योदय काल का सूक्ष्म निर्णय होता है।

**बृहत्पाराशर सूत्र:** "सर्वे ग्रहाः सर्वभावैरष्टकवर्गफलं ददुः।" सर्वाष्टकवर्ग में अधिक बिंदु वाली राशि से गोचर काल में भावों का शुभ फल स्वतः फलित होता है। अष्टकवर्ग सिद्धान्त

### ◆ व्यक्तित्व, स्वभाव एवं शारीरिक आरोग्यता

प्रथम भाव (तनु)

प्रथम भाव (तनु) मिथुन राशि का है तथा लग्नेश बुध जातक को ओजस्वी व्यक्तित्व, सत्यनिष्ठा एवं स्वाभाविक नेतृत्व क्षमता प्रदान करते हैं। शुभ ग्रहों का प्रभाव आत्मबल, बौद्धिक स्पष्टता एवं शारीरिक आरोग्यता को निरंतर सुदृढ़ बनाता है। उत्तम स्वास्थ्य एवं ऊर्जा संतुलन हेतु नियमित दिनचर्या, सात्विक आहार तथा मानसिक शांति के लिए ध्यान-साधना विशेष लाभकारी रहेगी।

★ मुख्य गुण: न्यायप्रियता, दूरदर्शिता, शारीरिक आरोग्यता एवं ओजस्वी वाणी।

### ◆ आजीविका, कर्म, व्यवसाय व दशमांश विचार

दशम भाव (कर्म क्षेत्र)

दशम कर्म भाव आजीविका, प्रशासनिक प्रतिष्ठा तथा स्वतंत्र व्यवसाय में अद्वितीय सफलता एवं अधिकार प्राप्ति का प्रबल योग दर्शाता है। जातक प्रबंधन, वाणिज्य, परामर्श, तकनीकी उपक्रम, वित्तीय नियोजन अथवा जनसंपर्क आधारित क्षेत्रों में असाधारण कुशलता प्रदर्शित करेगा। केन्द्र-त्रिकोण की शुभ स्थिति निरंतर करियर उत्थान, निष्कलंक प्रतिष्ठा तथा कार्यक्षेत्र में व्यापक यश व सम्मान सुनिश्चित करती है।

★ अनुकूल क्षेत्र: प्रशासनिक प्रबंधन, स्वतंत्र व्यापार, वित्तीय परामर्श व तकनीकी उद्यम।

### ◆ धन संपदा, वित्तीय कोष व लक्ष्मी योग

द्वितीय व एकादश

द्वितीय धन संचय भाव तथा एकादश लाभ भाव का परस्पर संबंध एक शुभ एवं सुदृढ़ धन योग का सृजन करता है, जिससे निरंतर आय तथा अचल संपत्ति में वृद्धि होती है। जातक अपने ज्ञान, विवेकपूर्ण निवेश तथा निरंतर पुरुषार्थ के बल पर स्थायी वित्तीय सुरक्षा एवं भूमि-भवन का सुख अर्जित करेगा। सट्टेबाजी अथवा भावुकतापूर्ण जोखिम से बचकर किया गया दीर्घकालिक नियोजन जीवनपर्यंत अटूट आर्थिक समृद्धि प्रदान करेगा।

★ धन योग: अचल संपत्ति का संचय, निरंतर आय स्रोत तथा स्थायी आर्थिक समृद्धि।

### ◆ विवाह, दांपत्य सामंजस्य व जीवनसाथी

सप्तम भाव

सप्तम कलत्र भाव एवं नवमांश (D9) चक्र एक सुसंस्कृत, भावनात्मक रूप से संबल प्रदान करने वाले तथा निष्ठावान जीवनसाथी का स्पष्ट संकेत देते हैं। ग्रहों का शुभ प्रभाव दांपत्य जीवन में परस्पर सम्मान, सामंजस्य तथा विवाह उपरांत भाग्योदय व सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि कराता है। संवाद में खुलापन, आपसी धैर्य तथा परस्पर विश्वास वैवाहिक जीवन को आजीवन सुखमय, शांत एवं स्नेहपूर्ण बनाए रखेंगे।

★ दांपत्य फल: निष्ठावान जीवनसाथी, परस्पर विश्वास तथा विवाह पश्चात भाग्योदय।

### ◆ माता-पिता, कुल सुख व पैतृक संस्कार

चतुर्थ एवं नवम

चतुर्थ मातृ भाव तथा नवम पितृ भाव परिवार से प्रगाढ़ स्नेह, मातृ-सुख, कुल परंपरा के प्रति निष्ठा तथा पैतृक पुण्यों के आशीर्वाद को सुदृढ़ बनाते हैं। सूर्य एवं चन्द्रमा की शुभ स्थिति माता-पिता का स्नेहाशीष, पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा पैतृक संपत्ति व संस्कारों का पूर्ण संरक्षण दिलाती है। कुल मर्यादा का पालन तथा माता-पिता की सेवा जातक के जीवन में दैवीय सुरक्षा एवं आत्मिक शांति का मार्ग प्रशस्त करेगी।

★ शुभाशीष: माता-पिता का पूर्ण स्नेहाशीष, कुल प्रतिष्ठा तथा पैतृक संस्कारों का संरक्षण।

### ◆ मनोबल, आंतरिक चेतना व बौद्धिक प्रज्ञा

चन्द्र व पंचम भाव

चन्द्रमा वृश्चिक राशि एवं अनुराधा नक्षत्र में स्थित होकर आंतरिक शांति, भावनात्मक संतुलन तथा गहन दार्शनिक विवेक प्रदान करता है। पंचम भाव का संबंध कुशाग्र बौद्धिक प्रज्ञा, रचनात्मक चिंतन तथा संकट के समय भी धैर्यपूर्वक उचित निर्णय लेने की क्षमता देता है। नित्य ईश्वर आराधना, स्वाध्याय तथा सात्विक चिंतन जातक के चित्त को सदैव एकाग्र, निर्मल एवं आनंदित रखेगा।

★ आत्मिक सामर्थ्य: तीव्र अंतर्दृष्टि, भावनात्मक संतुलन तथा निर्मल आध्यात्मिक चेतना।

**शास्त्रीय निर्णय: "लग्नं शरीरं, नवमांश आत्मा, दशमांशो कर्म सिद्धिः।"**

कुंडली के केन्द्र व त्रिकोण भावों का परस्पर सामंजस्य जातक के समग्र जीवन को यशस्वी, दीर्घायु एवं अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष के चतुर्विध पुरुषार्थ से परिपूर्ण बनाता है।

पाराशरी समन्वय

**महर्षि पाराशर योग सिद्धांत**

**"दशाफल प्रदातारो ग्रहाः केन्द्र-त्रिकोणगाः।" योगों का पूर्ण फल उनकी सक्रिय विंशोत्तरी दशा व गोचर में चरमोत्कर्ष प्राप्त करता है।**

राजयोग चक्र

## बुधादित्य योग

BPHS 40.4

दशा सक्रिय काल

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार, सूर्य और बुध एक ही भाव में हों तथा बुध अस्त न हो, तब यह योग बनता है।

⏰ **फलित समय (Dasha Timing):** आगामी मुख्य महादशा: बुध महादशा (2013–2030 (आयु 18–35 वर्ष))

## राज योग (गुरु-बुध)

BPHS 41.2-3

दशा सक्रिय काल

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार, केन्द्रेश (7मेश गुरु) और त्रिकोणेश (1मेश बुध) का परस्पर पूर्ण दृष्टि होने से राज योग बनता है।

⏰ **फलित समय (Dasha Timing):** आगामी मुख्य महादशा: बुध महादशा (2013–2030 (आयु 18–35 वर्ष))

## धन योग (लग्नेश व द्वितीयेश)

BPHS 42.2-6

दशा सक्रिय काल

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अध्याय ४२ के अनुसार, धन कारक भावों के स्वामियों (बुध और चन्द्र) का परस्पर पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध होने से प्रबल धन योग बनता है।

⏰ **फलित समय (Dasha Timing):** आगामी मुख्य महादशा: बुध महादशा (2013–2030 (आयु 18–35 वर्ष))

## गजकेसरी योग

BPHS, Phaladeepika

दशा सक्रिय काल

शास्त्रीय ग्रंथों (BPHS, Phaladeepika) के अनुसार, गुरु भाव 6 में चन्द्र भाव 6 से केन्द्र में स्थित। बुद्धि, यश, स्थायी समृद्धि एवं विश्वसनीय मानसिकता प्रदान करता है।

⏰ **फलित समय (Dasha Timing):** आगामी मुख्य महादशा: चन्द्र महादशा (2063–2073 (आयु 68–78 वर्ष))

## दशा-गोचर समन्वय एवं कालचक्र विवेचन (बुध महादशा काल)

सक्रिय पराशरी चक्र

### सक्रिय अंतर्दशा प्रभाव:

वर्तमान में **बुध महादशा** में **गुरु अंतर्दशा** गतिमान है। यह अवधि सम्बन्धित भावों को सक्रिय कर जीवन में निर्णय क्षमता, कर्म एवं आंतरिक चेतना को विशिष्ट दिशा प्रदान करती है।

### आगामी कालखंड दिशा:

यह महादशा चक्र वर्ष 2030 तक प्रभावी रहेगा। आगामी **शनि अंतर्दशा** में अनुकूल गोचर व शुभ ग्रहों के प्रभाव से स्थिरता एवं संबल में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

## ॥ सम्पूर्ण १२० वर्षीय विंशोत्तरी महादशा चक्र

ऋषि पाराशर विंशोत्तरी पद्धति

| महादशा स्वामी | प्रारंभ तिथि | समाप्ति तिथि | अवधि | वर्तमान स्थिति |
|---|---|---|---|---|
| **शनि महादशा** | 1995-05-15 | 2013-10-31 | शेष ≈ 18.46 वर्ष | भावी दशा काल |
| **बुध महादशा** | 2013-10-31 | 2030-10-31 | 17 वर्ष | ★ वर्तमान सक्रिय महादशा |
| **केतु महादशा** | 2030-10-31 | 2037-10-31 | 7 वर्ष | भावी दशा काल |
| **शुक्र महादशा** | 2037-10-31 | 2057-10-31 | 20 वर्ष | भावी दशा काल |
| **सूर्य महादशा** | 2057-10-31 | 2063-10-31 | 6 वर्ष | भावी दशा काल |
| **चन्द्र महादशा** | 2063-10-31 | 2073-10-31 | 10 वर्ष | भावी दशा काल |
| **मंगल महादशा** | 2073-10-31 | 2080-10-31 | 7 वर्ष | भावी दशा काल |
| **राहु महादशा** | 2080-10-31 | 2098-10-31 | 18 वर्ष | भावी दशा काल |
| **गुरु महादशा** | 2098-10-31 | 2114-11-01 | 16 वर्ष | भावी दशा काल |

**सक्रिय विंशोत्तरी दशा चरण (ACTIVE PERIOD)**
**वर्तमान महादशा: बुध • वर्तमान अंतर्दशा: गुरु (2025 - 2028) • आगामी: शनि अंतर्दशा**
सक्रिय प्रभाव काल

## ★ सूर्य, चन्द्र, मंगल एवं राहु महादशा — शास्त्रीय फलकथन, सावधानी व सिद्ध उपाय

महर्षि पाराशर होरा शास्त्र सम्मत

### ☉ सूर्य महादशा (६ वर्ष)

तेज तत्व • आत्मा व पिता

वृषभ (12म) • ! शत्रु राशि

**दशा प्रभाव:** सूर्य शत्रु राशि में: कार्यक्षेत्र में अतिरिक्त प्रतिस्पर्धा व वरिष्ठों से वैचारिक मतभेद संभव है। धैर्यपूर्वक कार्य करने पर सफलता मिलेगी।

**सावधानी:** उच्चाधिकारियों से अनावश्यक विवाद व नेत्र संबंधी पीड़ा से बचें।
**सिद्ध उपाय:** प्रातः तांबे के पात्र से सूर्य अर्घ्य दें। नित्य 'ॐ घृणिः सूर्याय नमः' का १०८ जप व रविवार को गेहूं/गुड़ दान करें।

### ☽ चन्द्र महादशा (१० वर्ष)

जल तत्व • मन व माता

वृश्चिक (6म) • ! नीच राशि

**दशा प्रभाव:** चन्द्र नीच स्थिति में: मानसिक अशांति, अनिद्रा, भय या अति-भावुकता संभव है। शिव आराधना व माता की सेवा से पूर्ण शांति प्राप्त होगी।

**सावधानी:** जल भय, कफ विकार, अनिर्णय व मानसिक तनाव से सतर्क रहें।
**सिद्ध उपाय:** भगवान शिव का दुग्ध मिश्रित जल से अभिषेक करें। 'ॐ सों सोमाय नमः' का जप एवं सोमवार को सफेद वस्तु/चावल दान करें।

### ♂ मंगल महादशा (७ वर्ष)

अग्नि तत्व • साहस व पराक्रम

सिंह (3म) • ✓ मित्र राशि

**दशा प्रभाव:** मंगल मित्र राशि में: ऊर्जावान कार्यशैली, साहसिक निर्णयों में सफलता, भ्रातृ वर्ग का सहयोग व आर्थिक उन्नति होगी।

**सावधानी:** जल्दबाजी व अकारण विवादों से दूरी बनाए रखें।
**सिद्ध उपाय:** नित्य हनुमान चालीसा या सुंदरकांड पाठ करें। 'ॐ अं अंगारकाय नमः' का जप व मंगलवार को लाल मसूर/तांबे का दान करें।

### ☊ राहु महादशा (१८ वर्ष)

वायु तत्व • कूटनीति व शोध

तुला (5म) • ◆ सम राशि

**दशा प्रभाव:** अप्रत्याशित जीवन-परिवर्तन, विदेश यात्रा, आधुनिक तकनीकी नवाचार, कूटनीतिक कुशलता एवं भौतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का तीव्र काल।

**सावधानी:** भ्रम, अति-जोखिम, सट्टेबाजी व असत्य भाषण से बचें। कागजी जांच पूरी रखें।
**सिद्ध उपाय:** महामृत्युंजय मंत्र अथवा भैरव उपासना करें। 'ॐ रां राहवे नमः' का जप एवं पक्षियों को नित्य सप्तधान्य/बाजरा डालें।

महर्षि पाराशर संहिता

**नवग्रहों की विंशोत्तरी दशाएं पूर्व संचित कर्मों के फलों का यथार्थ प्रकटीकरण करती हैं। अनुकूल उपाय प्रतिकूलताओं को शांत करते हैं।**

शुभ फल निर्णय

### ♃ गुरु महादशा (१६ वर्ष)

आकाश तत्व • ज्ञान व संतान

वृश्चिक (6म) • ✓ मित्र राशि

**दशा प्रभाव:** गुरु मित्र राशि में: विद्या, धर्म, सत्संग, पारिवारिक सुख, संतान की प्रगति व आर्थिक स्थिरता में निरंतर वृद्धि होगी।

**सावधानी:** अति-आशावादिता व खान-पान में लापरवाही से बचें।

**सिद्ध उपाय:** श्री विष्णु सहस्रनाम पाठ करें। 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' का जप एवं गुरुवार को चने की दाल व बेसन के मिष्ठान्न का दान करें।

### ♄ शनि महादशा (१९ वर्ष)

वायु तत्व • कर्म व न्याय

कुंभ (9म) • ★ स्वराशि

**दशा प्रभाव:** शनि स्वराशि में: अटूट धैर्य, निष्ठावान कर्म, जनसमूह का समर्थन, स्थाई परिसंपत्तियों का निर्माण व जीवन का सुदृढ़ आधार बनेगा।

**सावधानी:** अत्यधिक कार्यभार से मानसिक व शारीरिक थकान से बचें।

**सिद्ध उपाय:** शनिवार को पीपल वृक्ष के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएं। 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' जपें व निर्धनों की सेवा करें।

### ☿ बुध महादशा (१७ वर्ष)

★ वर्तमान सक्रिय

वृषभ (12म) • ✓ मित्र राशि

**दशा प्रभाव:** बुध मित्र राशि में: व्यापार में वृद्धि, नए अनुबंध, मित्रों का सहयोग व वाकचातुर्य से सर्वत्र कार्य सिद्धि होगी।

**सावधानी:** मानसिक चंचलता व वादों को निभाने में चूक से बचें।

**सिद्ध उपाय:** गौमाता को हरा चारा या पालक खिलाएं। 'ॐ बुं बुधाय नमः' का जप एवं श्री गणेश जी को दूर्वांकुर अर्पित करें।

### ☋ केतु महादशा (७ वर्ष)

अग्नि तत्व • मोक्ष व अंतर्ज्ञान

मेष (11म) • ◆ सम राशि

**दशा प्रभाव:** आध्यात्मिक जागरण, गूढ़ शोध, अंतर्ज्ञान, वैराग्य, तीर्थाटन एवं भौतिक बंधनों से मुक्ति। चिकित्सा व दर्शन में विशिष्ट सिद्धि।

**सावधानी:** अकेलापन, संशय, अज्ञात भय व स्वास्थ्य उपेक्षा से बचें। ध्यान-योग करें।

**सिद्ध उपाय:** भगवान गणेश जी की आराधना करें। 'ॐ कें केतवे नमः' का जप एवं श्वान (कुत्तों) को मीठी रोटी या भोजन कराएं।

### ♀ शुक्र महादशा (२० वर्ष)

जल तत्व • ऐश्वर्य व कला

मेष (11म) • ◆ सम राशि

**दशा प्रभाव:** समस्त भौतिक ऐश्वर्य, कलात्मक अभिरुचि, वाहन सुख, दांपत्य माधुर्य, वस्त्र-आभूषण व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यश-प्रतिष्ठा का विस्तार।

**सावधानी:** अति-विलासिता, अनियंत्रित व्यय व कामुकता से बचें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

**सिद्ध उपाय:** श्री सूक्त अथवा कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें। 'ॐ शुं शुक्राय नमः' का जप एवं शुक्रवार को श्वेत मिष्ठान्न का दान करें।

**★ दशा शांति विचार: दशा स्वामी ग्रह के वैदिक मंत्र जप, स्तोत्र पाठ एवं नियमित दान से समस्त प्रतिकूलताओं का पूर्ण शमन होता है।**

पाराशरी सिद्धांत

## ♄ वर्तमान शनि गोचर स्थिति (जन्म चंद्र राशि: वृश्चिक)

तटस्थ गोचर

**सामान्य गोचर (5वां भाव):** सामान्य संतुलित गोचर: कर्मनिष्ठ रहकर अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर रहें।

## ✦ शनि गोचर चक्र कालानुक्रम (२०१४ से २०४३+ का संपूर्ण विवरण)

चंद्र राशि से भाव गणना

| गोचर राशि | कालावधि (तिथि) | भाव | गोचर प्रभाव व अवस्था | स्थिति |
|---|---|---|---|---|
| वृश्चिक | 2014-11-02 से 2017-01-26 | 1वां | साढ़े साती — द्वितीय चरण (शिखर/मध्य) | — |
| धनु | 2017-01-26 से 2020-01-24 | 2वां | साढ़े साती — तृतीय चरण (उतरती/अस्त) | — |
| मकर | 2020-01-24 से 2023-01-17 | 3वां | शनि का शुभ गोचर (3वां भाव) | — |
| कुंभ | 2023-01-17 से 2025-03-29 | 4वां | कंटक शनि (चतुर्थ भाव ढैया) | — |
| मीन | 2025-03-29 से 2027-06-02 | 5वां | सामान्य गोचर (5वां भाव) | वर्तमान |
| मेष | 2027-06-02 से 2029-08-08 | 6वां | शनि का शुभ गोचर (6वां भाव) | — |
| वृषभ | 2029-08-08 से 2032-05-30 | 7वां | सामान्य गोचर (7वां भाव) | — |
| मिथुन | 2032-05-30 से 2034-07-13 | 8वां | अष्टम शनि (अष्टम भाव ढैया) | — |
| कर्क | 2034-07-13 से 2036-08-27 | 9वां | सामान्य गोचर (9वां भाव) | — |
| सिंह | 2036-08-27 से 2038-10-22 | 10वां | सामान्य गोचर (10वां भाव) | — |

## ॐ महाराज दशरथ कृत शनि स्तोत्र

स्कंद पुराणोक्त प्रामाणिक स्तोत्र

*"नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥ नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥"*

स्कंद पुराण के अनुसार, साढ़े साती व ढैया की पीड़ा निवारणार्थ महाराज दशरथ द्वारा रचित यह स्तोत्र सर्वाधिक फलदायी व शांतिकारक माना गया है।

## ◆ शास्त्रीय शनि शांति एवं दोष परिहार विधान

- **दीपदान:** प्रत्येक शनिवार सूर्यास्त के समय पीपल के वृक्ष के समीप सरसों के तेल का चौमुखा दीपक प्रज्वलित करें।
- **दान विधान:** काले तिल, उड़द की दाल, सरसों का तेल, अथवा लोहे की वस्तु किसी निर्धन/श्रमिक को सादर दान करें।
- **मंत्र जप:** रुद्राक्ष माला पर 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' अथवा 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः' का १०८ बार जप करें।
- **कर्म सुधार:** अधीनस्थ कर्मचारियों, मजदूरों एवं असहाय जीवों (विशेषकर काले श्वान व कौवे) के प्रति दयालु रहें।

## ॐ महर्षि जैमिनी चर कारक एवं कारकांश चक्र

जैमिनी उपदेश सूत्र सम्मत

| आत्मकारक (आत्मा) | अमात्यकारक (आजीविका) | कारकांश (नवमांश) |
|---|---|---|
| **शनि** (28.8°) | **बुध** (21.16°) | **मिथुन राशि** |
| कुंभ राशि में स्थित | वृषभ राशि में स्थित | नवमांश में 5वां भाव |

## ॐ परम इष्ट देव एवं नित्य उपासना विधान (कारकांश से द्वादश भाव)

मोक्ष एवं आध्यात्मिक संरक्षण

**आराध्य इष्ट देव: भगवती श्री महालक्ष्मी / माँ ललिता त्रिपुरसुंदरी / राधा रानी**

श्री सूक्त अथवा कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें। शुक्रवार को श्वेत पुष्प, मखाना व मिश्री का भोग अर्पित करें।

**सिद्ध बीज मंत्र: ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः**

**धर्म देव (९म भाव): कर्मफलदाता भगवान शनि देव / कालभैरव / कूर्म भगवान**

कारकांश से नवम भाव में स्थित अथवा अधिपति धर्म देव जीवन में सन्मार्ग, नैतिक दृढ़ता एवं ईश्वरीय मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

**जप मंत्र: ॐ शं शनैश्चराय नमः / ॐ कालभैरवाय नमः**

## ✦ वैदिक पंचमहाभूत एवं आयुर्-ज्योतिष त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) संतुलन

चरक संहिता व महर्षि पराशर सिद्धांत

**वैदिक आयुर्-ज्योतिष सिद्धांत:** ब्रह्माण्ड के पंचतत्व (अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश) मानव देह में त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) के रूप में कार्य करते हैं। जन्म लग्न एवं ग्रहों के राशि-संयोजन से निर्धारित शारीरिक प्रकृति का यह प्रामाणिक संतुलन है।

| ▲ अग्नि (तेजस) | ■ पृथ्वी तत्व | ● वायु तत्व | ▼ जल तत्व |
|---|---|---|---|
| **27%** | **18%** | **37%** | **18%** |
| पित्त कारक · जठराग्नि व तेज | स्थिरता · अस्थि व मांसपेशियां | वात कारक · स्नायु व श्वसन | कफ व सौम्यता · रस व रक्त |

**शास्त्रीय तत्व एवं राशि वर्गीकरण (चरक संहिता व फलदीपिका):**

**अग्नि:** मेष, सिंह, धनु (उष्ण-तीक्ष्ण) **पृथ्वी:** वृषभ, कन्या, मकर (धैर्य-स्थिर) **वायु:** मिथुन, तुला, कुंभ (गति-चिंतन) **जल:** कर्क, वृश्चिक, मीन (सौम्य-स्नेह)

**प्रधान प्रकृति: वायु तत्व (वात (Vata))**

नियमित समय पर गर्म व पौष्टिक आहार लें। तिल के तेल से मालिश एवं प्राणायाम लाभकारी हैं।

**संतुलन व आहार विधान: पृथ्वी तत्व**

हल्का व सुपाच्य भोजन लें, नित्य योग एवं प्रातःभ्रमण से ऊर्जावान रहें।

**दिनचर्या परामर्श:** नित्य प्रातः सूर्य नमस्कार, ऋतु अनुसार षडरस (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय) युक्त सात्विक भोजन, तथा इष्ट देव के बीज मंत्र का एकाग्र जप शारीरिक धातुओं को सम अवस्था में रखता है।

## ◆ मांगलिक दोष (कुज दोष) शास्त्रीय विश्लेषण एवं सम्पूर्ण प्रामाणिक निवारण विधान

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अध्याय ७७ सम्मत

### मंगल ग्रह स्थिति: 3म भाव (सिंह)

✓ पूर्णतः दोष रहित (अमांगलिक)

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र: जातक की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित नहीं है। जातक पूर्ण रूप से मांगलिक दोष के प्रतिकूल प्रभाव से मुक्त है।

✓ निर्णय: शुभ व सौम्य पत्रिका • विवाह एवं दांपत्य में निर्बाध अनुकूलता

### ॐ सम्पूर्ण शास्त्रोक्त मांगलिक दोष निवारण विधान (Authentic Vedic Nivaran)

**कुंभ / अर्क विवाह विधान:** प्रबल प्रभाव की स्थिति में विवाह पूर्व भगवान विष्णु स्वरूप घट (घड़े) अथवा अर्क वृक्ष से शास्त्रीय विवाह विधान संपन्न कराएं।

**श्री मंगल चंडिका / ऋणमोचक स्तोत्र:** प्रत्येक मंगलवार को श्री मंगल चंडिका स्तोत्र अथवा ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

**उज्जैन मंगलनाथ भात पूजा:** मंगल के मूल तीर्थ श्री मंगलनाथ (उज्जैन) या अंगारेश्वर महादेव पर विधिवत भात पूजा, रुद्राभिषेक व नवग्रह हवन कराएं।

**मंगलवार व्रत व ताम्बिक मंगल यंत्र:** २१ मंगलवार व्रत रखें, तांबे के मंगल यंत्र का नित्य पूजन करें तथा हनुमान जी को सिंदूर-चमेली तेल अर्पित करें।

**दान एवं सेवा:** मंगलवार को रक्तदान करें अथवा लाल मसूर दाल, तांबा, गुड़ व लाल वस्त्र का ब्राह्मण या जरूरतमंद को दान करें।

## ☊ कालसर्प दोष शास्त्रीय विश्लेषण एवं सम्पूर्ण प्रामाणिक शांति निवारण विधान

द्वादश कालसर्प योग संहिता सम्मत

### राहु-केतु अक्ष: राहु 5म भाव

✓ पूर्णतः कालसर्प दोष मुक्त

कुंडली में ग्रह राहु-केतु अक्ष के दोनों ओर स्वतंत्र विचरण कर रहे हैं। जातक पूर्ण रूप से कालसर्प दोष के दुष्प्रभावों से मुक्त है। जीवन में भाग्य, विद्या एवं कार्यक्षेत्र की निर्बाध प्रगति प्रशस्त है।

✓ निर्णय: दोष रहित • भगवान शिव की कृपा से सर्वविध कल्याण व यश प्राप्ति

### ॐ सम्पूर्ण शास्त्रोक्त कालसर्प शांति व निवारण विधान (Authentic Vedic Nivaran)

**त्र्यंबकेश्वर / महाकालेश्वर शांति महापूजा:** नासिक स्थित श्री त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग अथवा उज्जैन महाकालेश्वर पर विधिवत कालसर्प शांति व नागबलि विधान कराएं।

**नाग गायत्री एवं महामृत्युंजय जप:** नित्य १०८ बार नाग गायत्री अथवा महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

**चांदी के नाग-नागिन अर्पण:** नागपंचमी अथवा शिवरात्रि पर चांदी के नाग-नागिन जोड़े का पंचामृत अभिषेक कर विधिवत पूजनोपरांत पवित्र तीर्थ नदी में प्रवाहित करें।

**रुद्राभिषेक एवं तांबे का नाग:** सोमवार को भगवान भोलेनाथ का गन्ने के रस व पंचामृत से रुद्राभिषेक करें तथा शिवलिंग पर तांबे या चांदी का नाग अर्पित करें।

**सप्तधान्य व पक्षी सेवा:** नित्य प्रातः पक्षियों को बाजरा/सप्तधान्य डालें। शनिवार को काले तिल, कंबल व सूखे नारियल का बहते जल में विसर्जन करें।

★ शास्त्रीय सिद्धांत: वैदिक शांति विधान एवं निष्ठावान साधना से समस्त ग्रह दोष निष्प्रभावी होकर शुभ फल प्रदान करने लगते हैं। पाराशरी संहिता

## ◆ वैदिक रत्न धारण प्राण-प्रतिष्ठा विधि (धातु, अंगुली, शुभ वार एवं बीज मंत्र)

प्राण-प्रतिष्ठित शास्त्रीय विधान

| रत्न | स्वामी ग्रह | धातु | अंगुली | शुभ वार व समय | वैदिक बीज मंत्र (१०८ जप) |
|---|---|---|---|---|---|
| **हीरा / ओपल** | शुक्र (लग्नेश) | चांदी / श्वेत स्वर्ण | मध्यमा / कनिष्ठिका | शुक्रवार प्रातः (शुक्ल पक्ष) | ॐ शुं शुक्राय नमः |
| **पुखराज** | बृहस्पति | स्वर्ण / पंचधातु | तर्जनी अंगुली | गुरुवार प्रातः (पुष्य नक्षत्र) | ॐ बृं बृहस्पतये नमः |
| **मोती** | चन्द्रमा | चांदी धातु | कनिष्ठिका अंगुली | सोमवार प्रातः (रोहिणी नक्षत्र) | ॐ सों सोमाय नमः |

**॥ अथ ऋग्वेदोक्त शान्ति मन्त्र पाठः एवं नित्य आध्यात्मिक संकल्प ॥**

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

**॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ सर्व ग्रहारिष्ट निवारणमस्तु ॥ जातकस्य सर्वदा शुभं भवतु ॥**

इस जन्म पत्रिका की गणना खगोलीय डेटा से की गई है। यह मार्गदर्शन है।

ॐ प्रमाणित

**पंडितसाथी · प्रमाण पत्र संख्या: PS-KUN-SAMPLE**

खगोलीय डेटा से गणना (NASA JPL DE421 · लाहिड़ी अयनांश)

॥ शुभं भवतु कल्याणम् ॥